# पूज्य लालचंदभाई मोदी, राजकोट एवम् पूज्य बाबूजी जुगल किशोर जी युगल, कोटा द्वारा आत्म-सम्बोधन, तारीख १५-११-१९९६, कलकत्ता

(१५/११/१९९६ से ३०/११/१९९६ तक कोलकाता शिविर के दौरान पूज्य भाईश्री लालचंदभाई मोदी राजकोट एवं पूज्य बाबू युगलजी द्वारा श्री चंदुभाई मेघाणी की धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पाबेन को बीमारी के समय अस्पताल में अंतिम संबोधन के रूप में हुई तत्त्वचर्चा)

(पूज्य भाईश्री आदि सभी मुमुक्षुओं के पहुँचने के पहले पुष्पाबेन वैराग्य भावना बोलते हुए)

पुष्पाबेन:

जे ज्ञान-दर्शन माहरा ते ध्रुव मारूं रूप छे।
एकत्व छुं ने शुद्ध छुं बस एज मारूं रूप छे॥
चेतनमयी मुझ आत्ममां रक्षित थई रहेनार हुं।
नथी शरण जोइतुं कोईनुं बस शरण आतमरामनुं॥
एकत्व जाणी आत्मनुं बस लीन हुं मुझ आत्ममां।
अन्यत्व सौ परभावथी संयोगनुं तो नाम क्यां॥
आ देहने वली राग ते सौ चेतनाथी अन्य छे।
एमां नथी कईं सुख मारूं चिंतवूँ मुझ आत्मने॥
भवचक्रमां भमवा छतां परमात्मा मुझ पासमां।
हुं ध्यावतो निज आत्मने बस जई रह्यो छुं मोक्षमां॥
शुचिरूप मारो आत्मा हुं मलिनने स्पर्शवूं नथी।
भावो अशुचि रागना ते आत्ममां लावूं नहीं॥
ज्ञान तणी नौकामां बेठो आस्रव सर्वे दूर थया।
भवथी छूटी मोक्षे चाल्यो दुखड़ा मारा दूर थया॥
संवर छे मुझ परम मित्र ने हुं ज स्वयं बस संवर छुं।
सम्यकरूपी ढाल धरीने आस्रवने अटकावूं छुं॥
रत्नत्रयमां वृद्धि करतां कर्मों झरझर टूटी पड़े।
परीषहोने सहतो आतम मुक्तिपुरीमां आवी रहे॥
लोक भ्रमण हवे नथी, नथी बस लोक शिखरमां जावुं छे।
सादि-अनंत बस सुख ज वेदी सिद्धपुरीमां वसवुं छे॥
मुज आतमनो धर्म जचे धन दर्शन चारित्र ज्ञान छे।
क्षमा धर्म छे मुझ आतमनो राग रहित वीतराग छे॥

**भले बोधि छे दुर्लभ पण ते प्राप्त थाशे निज मारगमां।**
**धन्य बन्यो हुं बोधि पामी आनंद जाग्यो आतममां॥**
**नथी सुंदर कईं जगमां बीजुं बोधि मारी सुंदर छे।**
**जे बोधिना परम बोधथी मुक्ति मारी अंदर छे॥**
**मुक्ति मारी अंदर छे॥ मुक्ति मारी अंदर छे॥ मुक्ति मारी अंदर छे॥**

अनंत अनंत उपकारी श्री सद्‌गुरुदेव नो जय हो!

पूज्य भाईश्री: सावधानी अच्छी है।

चंदुभाई! राजकोट में जब डॉक्टर आता है तब ऐसा कहता हैं कि ये सोनगढ़ का शिष्य लगता है। (वो) एकदम fresh (फ्रेश) होता है। बहन एकदम फ्रेश हैं। कोई दुःख तो लगता नहीं, चेहरे (के) ऊपर दुःख नहीं (है)। नहीं तो चेहरे पर दुःख दिखने लगता है। आत्मा तो दुःख से भिन्न है, सुखमय है। मैं तो तीनों काल सुखमय हूँ। मेरे में दुःख का प्रवेश कहाँ है? आहाहा! ऐसी वस्तु है ज्ञान और आनंदमयी, चैतन्य परमात्मा मैं हूँ। ये सब (शरीर) तो खोखा (बारदान) है, इसमें कुछ है नहीं। संयोग है। बहुत अच्छी सावधानी है। बहुत अच्छा!

एक लन्दन में अपनी मुमुक्षु बेन, प्रेमचन्दभाई की धर्मपत्नी लक्ष्मीबेन जो कैंसर से पीड़ित थीं....बहुत बीमार..... घर से दूर २०० किलोमीटर दूर उनके पुत्र (राजेश) ने मुझे फोन लगाया और इधर अस्पताल में लाइन जोड़ दी कि ये (बहन) सुनें। समझ गए? फिर मैंने कहा कि - समाधिमरण तो सम्यग्द्रष्टि को होता है परन्तु सावधान मरण ये (कोई) चीज जुदी है। ये सावधानमरण में है (बहन का) जीव था। आहिस्ता-आहिस्ता स्वयं का काम कर लेंगी - चेहरा (ऐसा) बोलता है।

चेहरे पर दुःख जैसा (कोई) नाम नहीं है। इनको खबर है। इनको खबर भी है कि आयु कम है उनको खबर है। और ये भी खबर है कि आत्मा मरता नहीं है। दोनों बात जानती हैं न? हें? कि नहीं? दोनों (बातें) जानती हैं हो! सबको दोनों बातें जानना चाहिए।

पुष्पाबेन: मेरा पुरुषार्थ (तो) 'आत्मा मरता नहीं' इसमें है। मेरा पुरुषार्थ इसमें है कि आत्मा मरता नहीं।

पूज्य भाईश्री: बस! इसमें ही रखो (कि) मरता नहीं है ये। (मैं) अमर हूँ, नित्य ध्रुव परमात्मा हूँ। मेरे में क्या है? पुण्य-पाप, सुख-दुःख के भाव बाहर हैं सब। आहाहा! अब परिणाम बाहर हैं तो..... ये तुम्हारे पुत्र का क्या नाम है? जयेश। जयेश तो बाहर ही है। ये तो कहाँ का कहाँ है। ये तो मुझे याद ही नहीं आता। कहाँ का कहाँ है! ये तो (मुझे) दिखता ही नहीं।

पुष्पाबेन: ये तो अभी तक मैंने स्वयं अपना माना था (पर) अब कुछ भी मेरा नहीं (है)। कुछ भी, कोई मेरा नहीं (है)।

पूज्य भाईश्री: तुम्हारा (तो) एक शुद्धात्मा है। बस! एक ज्ञायकभाव मेरा है, बाकी कुछ मेरा नहीं। जो मेरे साथ रहे तीनों काल! जुदा हो जाये वो मेरा नहीं। ये शरीर जुदा पड़ जाये, शरीर जुदा पड़ जाये, परिणाम जुदा पड़ जाये ये मेरी चीज नहीं (है)। ये तो अनित्य नाशवान है (और) मैं तो नित्य ध्रुव

परमात्मा हूँ। आहाहा! मेरे में तो ज्ञान और आनंद भरा है और तुम्हारे ज्ञान में अभी तुम्हारा आत्मा जानने में आ रहा है - ऐसा लेना। अभी मेरे ज्ञान में ये शरीर जानने में आ रहा है, दुःख जानने में आ रहा है - ऐसा नहीं लेना। मेरे ज्ञान में ज्ञायक जानने में आ रहा है।

प्रकाश में घट-पट प्रसिद्ध नहीं होते। प्रकाश में प्रकाशक जानने में आता है। ऐसे ज्ञान में ज्ञायक जानने में आ रहा है। मुझे दूसरा कुछ जानने में आता ही नहीं है न। (यदि) मुझे जानने में आये तो राग-द्वेष हो न! (परंतु) मुझे जानने में आता ही नहीं, जानने में नहीं आता। यदि जानने जाऊँ तो राग होगा परंतु जाननेवाले को जानो तो अनुभव हो जायेगा। ये बिस्तर में (बैठे-बैठे) अनुभव हो सकता है।

पुष्पाबेन: ऐसा ही है।

पूज्य भाईश्री: एक जीव को देखा मुंबई हॉस्पिटल में। समझ गए? मैंने बात की बेन! (और) घर गया वहाँ से (फिर) उनका स्वर्गवास हुआ। उन्होंने कहा कि लालचंदभाई आये तो मेरा काम हो गया। लेकर जा रही हूँ। अरे! चमत्कार है। तुम्हारे पास ही तुम्हारा आत्मा है।

पुष्पाबेन: इसलिए आप वहाँ से यहाँ पधारे।

पूज्य भाईश्री: सच्ची बात है।

पुष्पाबेन: आप वहाँ से मेरे लिए अभी यहाँ आये हो। कोई ये शिविर के लिए नहीं आए।

पूज्य भाईश्री: अरे! वाह रे वाह! इसमें सवाल ही नहीं। वो तो यहाँ आना ही था।

पुष्पाबेन: अब आप ऐसा मंत्र दे जाओ कि मैं अंत समय तक इससे भी उग्र ज्यादा पुरुषार्थ (और) उग्र पुरुषार्थ करूँ।

पूज्य भाईश्री: बस! ज्ञान में तुम्हारा ज्ञायक जानने में आ रहा है।

प्रकाश में प्रकाशक जानने में आ रहा है, प्रकाश में घट-पट जानने में नहीं आता। इसमें ज्ञान में जय जानने में नहीं आता। आहाहा! जय-विजय ऐसा मेरा परमात्मा जानने में आता है। जय-विजय तो यहाँ हैं, वो जय-विजय तो बाहर हैं। ऐसे "जाननेवाला जानने में आता है, वास्तव में पर जानने में नहीं आता" - इस मंत्र की साधना करते-करते देह छूट जाएगी, बस। ये तो अल्पकाल में तुमको फिर से ज्ञानी का योग होनेवाला है। यहाँ से जाओगी न तो .. वर्तमान काल में तो गुरुदेव का योग था तुम्हें, पर गुरुदेव के अलावा बहुत ऊँचा व्यक्ति (का साथ) तुम्हें मिलेगा। समझ गए? ऐसा दिखता है मुझे। बस! साधना करना और साधना करके सबसे पहले निर्वाण की प्राप्ति करो, यही मेरी शुभेच्छा है। बस!

चंदुभाई: बाबूजी ने जो आशीर्वाद दिया, लिखा (हुआ) पत्र जयेश ले जायेगा। भरी सभा में दे देगा ये पत्र।

पूज्य भाईश्री: साधक है! सच्चा साधक! इनको खबर है कि देह छूटनेवाली है। देह छूटनेवाली है (परन्तु) उनके चेहरे पर दुःख नहीं, आकुलता नहीं (है)।

जब मैं वरली मुंबई में रहता था तब एक मेरे सम्बन्धी साथ में रोज घूमने आते थे। तब मेरे घर ऊपर आये जो पास में ही था, चाय पानी पिया। मैंने कहा.... उनका नाम रायचंदभाई नाम था। मैंने कहा रायचंदभाई! बहुत ममता करने जैसी नहीं है। यह देह छूट जाएगी। (तो) रोने लगे कि ये क्या

कहते हो - देह छूट जाएगी? मैं मर जाऊँगा? मैंने कहा (कि) तुम नहीं मरोगे, तुम तो अमर हो। तुम्हारा मरना कहाँ है? लोग कहते हैं कि देह छूटी तो मरण हुआ (मगर) मैं मरता-वरता नहीं। मेरी बात नहीं करो मरने-वरने की। मैं तो अमर अविनाशी तत्त्व हूँ, परमात्मा हूँ। बस! इसके ऊपर लक्ष जाये तो काम हो जाये।

पुष्पाबेन: मेरे तो एक ध्येय है कि अभी इस समय साधर्मी मेला भरा है और मेरा देह छूट जाये और सब बाद में आकर तैयार होकर सभी शिविर में बैठें..... - (मेरा) भाव ऐसा है यदि इस प्रकार हो जाये तो....

पूज्य भाईश्री: आहाहा! अच्छा होगा सब। सब अच्छा होने वाला है। अच्छा होने वाला है।

मैं तो खुश इसलिए हुआ कि तुम्हारे चेहरे (के) ऊपर जरा भी मरण का भय नहीं (है)। आहाहा! मानो तुमने मरण को जीत लिया हो - ऐसा लगता है। नहीं तो चेहरे पर बहुत दुःख होता है। हाय हाय! मैं चला जाऊँगा; ये सब भरा-भरा घर कुटुंब परिवार! आहाहा! जरा भी (भय) नहीं है। है ही नहीं कुछ .... खाली (खंखेर) कर दिया (सब यहीं झड़ा दिया)। आहाहा!

झूठ-झूठ कहती है (कि) मेरा बेटा हो! उसको झूठ कहना पड़े।

पुष्पाबेन: ना ना! अब मैं नहीं कहती .. कहती ही नहीं।

पूज्य भाईश्री: तो ठीक! कहना नहीं (क्योंकि) है नहीं तुम्हारा।

पुष्पाबेन: है ही नहीं। ये सब आते हैं तो मैं कहती हूँ क्यों तुम सब मेरी खबर लेने आते हो? मुझे मेरे में रहने दो। ...... मुझे शांति से मेरा काम करने दो।

पूज्य भाईश्री: वाह वाह वाह! बहुत सरस!

पुष्पाबेन: .... मुझे शांति से मेरा काम करने दो।

शांतिभाई जवेरी: अद्‌भुत वाणी निकली है।

पूज्य भाईश्री: अच्छा है! बहुत अच्छे परिणाम! बहुत ऊँचे परिणाम!

पुष्पाबेन: बहुत हुआ भाई! अनंतकाल से यही किया हमने।

पूज्य भाईश्री: मेरे में भव नहीं..... तो नहीं होंगे (भव)। मेरे में भव नहीं न....

पुष्पाबेन: नहीं हैं। मेरे में तो नहीं।

पूज्य भाईश्री: नहीं हैं तुम्हारे में (भव, ऐसा निर्णय हुआ) तो नहीं होगा भव, जाओ।

पुष्पाबेन: हाँ! नहीं (हैं)। मेरे में भव ही नहीं।

पूज्य भाईश्री: बस! तो नहीं होंगे भव। जिसको ऐसा लगे कि मेरे में भव हैं तो उसको भव भले हों परन्तु तुम्हारे .... तुमने कहा ना कि मेरे में भव ही नहीं। भव नहीं तो तुम्हारे भव कहाँ से होंगे?

पुष्पाबेन: पूज्य गुरुदेव मेरे लिए ऐसी-ऐसी वस्तु लाये (बता गए) .... तो मेरे में भव कहाँ से हों?

पूज्य भाईश्री: कहाँ से रहें? बस! वाह वाह! बहुत सरस!

पुष्पाबेन: (भव) हों? कितना! गुरुदेव ने कितनी मेहनत करके पूरे पाखंड को पूरा नष्ट कर दिया। जीवंत रखा.... चौथा काल गुरुदेव ने बता दिया अपने को।

पूज्य भाईश्री: मर जाते नहीं तो हम।

पुष्पाबेन: (नहीं तो) हम सब मर जाते।

कोई क्रिया जड़ थई रह्या ..... सब क्रिया में ही रह गए थे और अब मुझे क्रिया नहीं चाहिए।

पूज्य भाईश्री: भव मेरे में नहीं (हैं) अर्थात् खलास।

पुष्पाबेन: तो क्रिया कहाँ से हो? ना हो क्रिया भाई। अब मेरे में क्रिया नहीं। मुझे मेरे गुरु मिल गए हैं। मुझे गुरुदेव ने कहा तेरे में भव नहीं। इसलिए आप सबको यहाँ भेजा। गुरुदेव ने भेजा है भाई, अभी आप सबको यहाँ। आपको गुरुदेव ने यहाँ भेजा है कि - जाओ! तुम जाओ। किसलिए आप यहाँ बैठे हो राजकोट में?

पूज्य भाईश्री: सच्ची बात है। इसलिए ही आया, गुरुदेव ने भेजा।

पुष्पाबेन: इसलिए (आप) आये और इन सभी ने मेहनत की। (घर के लोगों से) मैं कहती हूँ मेरे पास कोई नहीं आना। सभी वहाँ जाओ, भाई की सेवा करना; मेरे पास नहीं। भाई को जिसमें साता उपजे वैसा करना। भाई को जितना time (समय) हो व्याख्यान देने (का कहना)।

पूज्य भाईश्री: वातावरण अच्छा है यहाँ। कहाँ राजकोट (और) कहाँ कलकत्ता!

पुष्पाबेन: कहाँ राजकोट! और अभी इस ही समय इन लोगों ने शिविर रखा।

पूज्य भाईश्री: और बहुत सावधानी है न, इसलिए बात हो सकती है। मैं कहता हूँ वह तुम समझ सकती हो इसलिए तुम्हारा परिणाम मैं जान सकता हूँ।

पुष्पाबेन: मुझे कहीं थकान नहीं लगती।

पूज्य भाईश्री: नहीं?

पुष्पाबेन: नहीं, जरा भी नहीं। जरा भी नहीं। जरा भी थकान नहीं लगती मुझे। मुझे तो आनंद आता है अन्दर में से ऐसे उमड़ता (उत्साह) उपजती है, मेरा रोम रोम ...

पूज्य भाईश्री: ज्ञान में आप आ गयीं न! भव है ही नहीं अर्थात् ज्ञान में आ गए, तो खलास हो गया। भव नहीं उसको (भव) नहीं। भव नहीं तो भव नहीं आएगा। भव हैं ही नहीं। परमात्मा में कैसा भव?

चंदुभाई: निष्क्रिय तत्त्व में भव कहाँ से हों?

पूज्य भाईश्री: वस्तु भव बगैर की है। भव के भाव बिना की है। ये परमात्मा है, अन्दर विराजमान है।

पुष्पाबेन: मेरा ज्ञान जो काम करता है वही काम करूँ न! दूसरा किसलिए करूँ?

पूज्य भाईश्री: बस! नहीं करना। नुकसान का धंधा अपने को करना नहीं है अब।

पुष्पाबेन: नुकसान का धंधा किसलिए करना? हम तो व्यापारी हैं तो नुकसान का धंधा किसलिए करना? ......

पूज्य भाईश्री: अपने को तो नफा का व्यापार करना बस।

पुष्पाबेन: अपने को तो नफा का.....

पूज्य भाईश्री: बस! बहुत अच्छा! बहुत अच्छा! बहुत अच्छा! खुश होने जैसा है, लो! (आपके) परिणाम देखकर खुशी होती है। वास्तव में गुरुदेव का चमत्कार है।

चंदुभाई: गुरुदेव ने सबका समाधान किया है। अजमेरा साहब ने चिट्ठी लिखी थी कि गुरुदेवश्री ने अपने को जीना तो सिखाया परन्तु मरने की प्रक्रिया क्या है - ये भी अपने को (गुरुदेव ने) बताई।

पूज्य भाईश्री: बराबर! बराबर! मरे कौन?

चंदुभाई: अर्थात् कि अंत में मरने की क्रिया क्या है, किस प्रकार मरना - यह भी सिखा गए। इसके पुण्य का योग ऐसा है कि आप जैसे ज्ञानी यहाँ पधारे, बाबूजी पधारे।

पूज्य भाईश्री: योगानुयोग हो जाता है। इन्होंने कहा न कि गुरुदेव ने भेजा है - ये सच्ची है (बात)। सच्ची है, बात सच्ची है। नहीं तो कहाँ कलकत्ता आने का सपने में भी नहीं था।

चंदुभाई: स्वप्न भी नहीं। कहाँ राजकोट और कहाँ (कलकत्ता)!

पूज्य भाईश्री: नहीं! अब मैं कहीं जाता भी नहीं। यह तो कुदरती कलकत्ता का योग हो गया।

चंदुभाई: योगानुयोग मिलान बन गया पर अच्छा योग बन गया। १५ दिन का प्रोग्राम बहुत कहलाता है। (पुष्पाबेन) powerful (ताकतवर) बहुत है। नहीं तो चार महीने से किसी दिन ..... स्वयं का हित किया।

पूज्य भाईश्री: जिसको देह से जुदा आत्मा है ऐसा रटन रहता हो, उसको देह के वियोग का कोई (किसी भी) दिन दुःख होगा ही नहीं। उसको वियोगरुप ही है, अभाव स्वभावरुप ही है। मेरे में कहाँ है देह? आहाहा..! देह से जुदा मैं ज्ञानानंद परमात्मा हूँ। देह का सम्बन्ध ही नहीं हुआ मुझे। सम्बन्ध हुआ हो तो छूटे न! मैं तो सम्बन्ध बगैर का हूँ। मैं तो ज्ञान और आनंद की मूर्ति हूँ अंदर में विराजमान। आहाहा! देह जानने में नहीं आती, देह को जाननेवाला ज्ञान मेरा नहीं। इस देह को जाननेवाला ज्ञान है न, ये आँख का उघाड़ (सामर्थ्य) जानता है देह को।

चंदुभाई: इन्द्रियज्ञान है।

पूज्य भाईश्री: इन्द्रियज्ञान जाने, भले जाने (परन्तु) मैं देह को नहीं जानता। मेरे जानने का विषय ही नहीं है वो। यह जो खोखा है न, उसको आत्मा का ज्ञान नहीं जानता। उसको तो आँख की ताकत भाव इन्द्रिय जानती है। तो भाव इन्द्रिय से तो मैं भिन्न हूँ। मेरे में कहाँ है भाव इन्द्रिय? शास्त्र ज्ञान मेरे में कहाँ है? देह का ज्ञान तो नहीं परन्तु शास्त्र का ज्ञान मेरे में नहीं है। आहाहा! और आत्मा का ज्ञान है तो इस ज्ञान में तो आत्मा जानने में आये न? जिसका हो वही जानने में आये।

पुष्पाबेन: बस जिसका हो उसको जाने। तो ये बात तू लाया कहाँ से? ये बात तू लाया कहाँ से कि मुझे ये (देह) जानने में आता है? कहाँ से लाया तू (ये बात)?

पूज्य भाईश्री: वाह रे वाह! बहुत सरस! क्या नाम तुम्हारा?

पुष्पाबेन: पुष्पाबेन!

पूज्य भाईश्री: पुष्पाबेन, बहुत सरस! ये मुझे पर जानने में आता है (ये बात) तू लाया कहाँ से?

पुष्पाबेन: कहाँ से ये बात तू लाया कहाँ से?

पूज्य भाईश्री: कहाँ से लाया (क्योंकि) स्वरुप नहीं है तेरा। तेरा स्वरुप नहीं और तू कहता है (कि) इसको जानता (हूँ), उसको जानता (हूँ)।

पुष्पाबेन: कहाँ से? तू लाया कहाँ से ये बात? गुरुदेव तो (कहते हैं) विरल है, विरल है।

पूज्य भाईश्री: वाह रे वाह! वाह रे वाह! बहुत सरस!

पुष्पाबेन: ये कहाँ से बात आयी, ऐसी बात?

पूज्य भाईश्री: अज्ञान के घर में से आई है।

पुष्पाबेन: अज्ञान के घर में से....

पूज्य भाईश्री: अज्ञानी भले बोले....

पुष्पाबेन: तो सब ज्ञानी हो जाओ न! किसलिए सब अज्ञानी रहते हो?

पूज्य भाईश्री: हाँ! ज्ञानी ही हो जाये जो तुम्हारी बात को स्वीकार करे तो। तुम कहते हो ऐसी जो सबकी मान्यता हो तो अज्ञानी कोई ना रहे। अज्ञानी क्यों रहते हैं कि "मैं पर को जानता हूँ" "पर को जानता हूँ" (ऐसा माने तो)। अरे! बात लाया कहाँ से? स्वभाव में है नहीं (कि) पर को जानने का।

पुष्पाबेन: वह तेरा है ही नहीं (शरीर)..... तो (ये बात) कहाँ से लाया है कि मैं (उसे) जानता हूँ। मेरा पैसा है..... कैसा मूरख (मूढ़).... हम उसको क्या कहेंगे? पागल कहेंगे न!

पूज्य भाईश्री: पागल, पागल!

पुष्पाबेन: पागल कहेंगे न! अब मुझे बहुत चुभती है (कि) ये सब बात कहाँ से लाया? सब झूठी ही झूठी....

पूज्य भाईश्री: ये टेप उतरती है न! इसका अक्षर-अक्षर (कागज पर) उतारकर और xerox (ज़ेरॉक्स) कराके और फिर सबको बाँटना, प्रभावना करना। (इसकी) प्रभावना करने जैसा है (कि) आखिरी समय में गुरुदेव के भक्त क्या बोलते हैं..... कि 'मैं पर को जानता हूँ ये (बात) तू लाया कहाँ से?' आहाहा बहन! तुम्हारे ज्यादा भव नहीं हैं अब (ऐसा) मुझे लगता है।

चंदुभाई: बाबूजी के (भी) यही शब्द थे, भव नहीं होंगे।

पुष्पाबेन: ना हों भाई।

पूज्य भाईश्री: मैं पर को जानता हूँ इसमें भव की उत्पत्ति हुई है।

पुष्पाबेन: इसमें से ही हुई है। इसमें से ही हुई है।

पूज्य भाईश्री: वाह रे वाह! देखो प्रज्ञा! लाया कहाँ से यह? वस्तु में तो नहीं (है) पर को जानना।

पुष्पाबेन: वस्तु में तो नहीं।

चंदुभाई: वस्तु में है ही नहीं।

पूज्य भाईश्री: करना तो कहीं गया परन्तु जानता भी नहीं (है)।

पुष्पाबेन: जानता भी नहीं है। है ही नहीं।

चंदुभाई: कर्ताबुद्धि और ज्ञाताबुद्धि छुड़ाई।

पुष्पाबेन: फिर कहे कि मैं बुद्धिमान हूँ.... हाँ! फिर होशियार कहता है।

पूज्य भाईश्री: मूरख!

पुष्पाबेन: मूरख, स्वयं स्वयं को होशियार कहता है।

पूज्य भाईश्री: वाह रे वाह! चंदुभाई! तुम भाग्यशाली हो (कि) तुम्हारे घर में रत्न है हो। आहाहा!

बहुत अच्छी बात की (कि) स्वभाव में नहीं है पर को जानना। ये स्वयं को जानना छोड़े तो पर को जाने न! स्वयं को जानना छोड़े तो जड़ हो जायेगा आत्मा। जाननहार ही जानने में आता है सबको। आबाल-गोपाल सबको भगवान आत्मा जानने में आता है। 'हाँ' करे तो हालत हो जाएगी।

पुष्पाबेन: हाँ! हालत हो जाएगी। तेरी हालत सुधर जाएगी। हालत सुधर जाएगी 'हाँ' करे तो।

पूज्य भाईश्री: जय! ये सीखने जैसा है माँ के पास से। माँ को तुम गुरु बना लो। वे गुरुदेव तो हैं ही अपने सबके (गुरु)... पर जो तत्त्व की बात करे अपूर्व, वह गुरु कहलाता है। माँ नहीं है तुम्हारी, माँ जैसा नहीं देखो अभी.... ऐसे उनके वचन निकलते हैं।

चंदुभाई: अब मैं इन्हें पत्नी तरीके नहीं देखता भाई!

पूज्य भाईश्री: देख ही नहीं सकते न, देख ही नहीं सकते।

पुष्पाबेन: मैं पत्नी हूँ ही नहीं। पूज्य भाईश्री: हैं नहीं, बोलो!

पुष्पाबेन: फिर भी अभी बोलते हैं, अभी बोलते हैं। देखो तो सही! देखो तो सही!

पूज्य भाईश्री: वाह रे वाह!

शांतिभाई: कितनी वीर्यवान हैं! कितनी वीर्यवान हैं मुझे ऐसा लगता है।

पूज्य भाईश्री: वीर्यवान हैं। पुरुष वीर्य है। बहुत अल्पकाल में निकल जायेंगी, निकल जायेंगी। ये बात इनको मूल (पकड़) आई कि 'मैं पर को नहीं जानता' - ये बात लाया कहाँ से? जानता नहीं है आत्मा और जानता हूँ, जानता हूँ (ऐसी) बकवास करता है झूठी..... मर जायेगा तू। आहाहा! पर को जानने से ही संसार खड़ा हो गया।

पुष्पाबेन: और मनुष्य भव चला जायेगा। मनुष्य भव चला जायेगा। फिर मनुष्य भव चला जायेगा, खलास। कहाँ जायेगा तू? कहाँ उतरेगा (किस जगह) जायेगा?

पूज्य भाईश्री: **उपजे मोह विकल्पथी समस्त आ संसार, अंतर्मुख अवलोकतां विलय थता नहीं वार।** आहाहा!

इन्द्रियज्ञान से मोह (की) उत्पत्ति हुई है और इन्द्रियज्ञान पर को जानता है। तुम ना कहते हो कि पर को मैं जानता नहीं तो बेचारा इन्द्रियज्ञान शिथिल होकर मर जायेगा और आत्मज्ञान प्रगट हो जायेगा। आगे जाने का उपाय यही है।

"मैं पर को जानता नहीं, परन्तु जाननहार जानने में आता है" - ये महामंत्र है। आहाहा! गुरुदेव कहते हैं कि मैं पर को जानता हूँ (ये) तेरी भ्रान्ति है। आहाहा! भ्रांति हो गयी है तुझे। आहाहा..! मैं जानेवाला नहीं। यहाँ बारह बजे तक बात करनेवाला हूँ। ऐसे में जाने का मन कहाँ से हो?

चंदुभाई: हाँ! कहाँ मन हो? बराबर!

पूज्य भाईश्री: वाह रे वाह! वाह बहन, वाह! धन्यवाद तुमको।

(पूज्य बाबूजी युगल जी, कोटा द्वारा सम्बोधन)

पूज्य बाबूजी: आपकी शांति देखकर हमको सबको प्रेरणा मिलती है। ऐसी शांति हज़ारों-लाखों में नहीं देखी जाती। इतनी शांति! हाँ!

पुष्पाबेन: हमको तो आपको देखकर प्रेरणा मिलती है।

पूज्य बाबूजी: वो तो आपका बड़प्पन है और आपको प्रेम है उस तत्त्व से इसलिए एक दूसरे को देखकर मन में प्रसन्नता तो होती ही है। लेकिन ये जो समय है न, इसमें तो हमेशा यूं ही विचार करो कि ये तत्त्वज्ञान की ही विजय हो रही है। वो तो पूरा जोर कर रहा है पुद्गल तो।

पुष्पाबेन: वो तो है!

पूज्य बाबूजी: लेकिन जोर करने पर भी इसका कुछ बस नहीं चल रहा मेरे सामने। और सचमुच नहीं चल रहा है। आपकी जो परिणति है (एकदम) उछलती हुई परिणति, उसके सामने कहाँ जोर चल रहा है? कुछ नहीं चल रहा है। और उसके सामने क्या जोर चलेगा? जो ध्रुव है उसके सामने जोर कहाँ चलेगा? क्या चलेगा? उसका बिगड़ेगा भी क्या? बिगड़ा ही नहीं है आज तक।

पुष्पाबेन: बिगड़ा भी नहीं है, बिगड़ेगा भी नहीं।

पूज्य बाबूजी: वो तो पुद्गल है। और अपने परिणाम ने उसका (ध्रुव का) कितना घात किया, कितनी कोशिश की! लेकिन उसका तो कुछ भी नहीं हुआ (और) होना भी नहीं है। वो तो उसका स्वरूप तो ज्यों का त्यों चमचमाता रहा न, अंतरंग में तो।

बहुत बढ़िया चिंतन है आपका! सब लोग बहुत प्रभावित हैं। आपकी तो पर्याय सफल हो गई एकदम। (स्त्री) पर्याय सफल हो गई। बहुत निकट भव्यता हो गई माने, संसार ज़्यादा बाकी नहीं है।

पुष्पाबेन: इसके लिए तो आप आए हैं इधर।

पूज्य बाबूजी: बहुत उज्ज्वल परिणति है आपकी, चैतन्य पर स्थापित.... बहुत उज्ज्वल है।

वो तो जो उपयोग है उसमें हमेशा ये बात निरंतर चले कि कुछ ना तो हुआ है अनादिकाल में और अनंतकाल में भी कोई कुछ कर ही नहीं सकता है। ये तत्त्व ही ऐसा है, उसकी बनावट ही ऐसी है। ऐसा फौलादी तत्त्व है ये! बस! इसमें बहुत कम हो जाता है, दर्द बहुत कम हो जाता है इसमें। क्योंकि मिथ्यात्व गल जाता है न!

पुष्पाबेन: बस एक तत्त्व ही रहता है। और कुछ रहता ही नहीं है। दर्द रहता ही नहीं है। दर्द से न्यारा ही रहता है।

पूज्य बाबूजी: सब गल जाता है इतने से चिंतन में....

पुष्पाबेन: पूरा गल गया। मेरे को तो है ही नहीं। मैं तो आपको वही बोलती हूँ (कि) मेरे को तो है ही नहीं कुछ।

पूज्य बाबूजी: बहुत अच्छा! ऐसा ही है। ऐसा ही होना चाहिए। ऐसा ही होना चाहिए। सब लोग.... बहुत प्रशंसनीय है आपकी परिणति। और आपको ज़्यादा मिलने-जुलने में लगता हो न, थोड़ा disturbance (बाधा) लगता हो चिंतन-धारा में (तो) वो भी कम हो जाये। चंदुभाई सब कम कर देंगे।

पुष्पाबेन: हाँ! मैं तो कहती हूँ कि सब लोग चले जाओ।

पूज्य बाबूजी: हाँ! ये तो औपचारिकतायें हैं।

पुष्पाबेन: बस एक पाँच मिनिट बैठो, फिर चले जाइए।

पूज्य बाबूजी: लोगों का क्या है (कि) लोग तो अपना एक व्यवहार निभाने आते हैं।

पुष्पाबेन: आते हैं। आते हैं मेरे को मतलब ....

पूज्य बाबूजी: हाँ! ठीक बात है न! उसमें धारा में बाधा पड़ती है।

पुष्पाबेन: हमको भी खेद लगता है न, तो बोलती हूँ सब यहाँ से चले जाओ। मुझे.... अकेला रहने दो मुझको। वहीं (पंडाल में) चले जाइए आप। वहाँ क्यों खड़े-खड़े कितनी बार देखेंगे बाबूजी? छोरा कितनी बार देखने को (आए)? सिर्फ दो मिनिट, पाँच मिनिट, दस मिनिट, फिर चले जाईए सब।

और वहाँ (शिविर) चलता है (वो) कितना अच्छा आयोजन किया है।

पूज्य बाबूजी: सचमुच तो आपके यहाँ चल रहा है। ये आपके यहाँ चल रहा है। वही है माने.... वहाँ (पंडाल में) तो सुनना ही है खाली (और) यहाँ तो प्रयोग में चल रहा है। आपने तो सफल करके ही दिखा दिया उसको, (आयोजन को) साकार करके ही दिखा दिया। हाँ! ऐसे शक्तिशाली उपयोग की परिणति वो विरल जीवों में होती है (कि) जो सबको लौटा दे कि - आओ, कोई आओ मुझे क्या है? (ध्रुव को तो) कोई फर्क नहीं पड़ता है।

पुष्पाबेन: कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरे को तो कुछ फर्क नहीं पड़ता।

पूज्य बाबूजी: (ध्रुव में तो) कोई अंतर ही नहीं पड़ता। कुछ होना ही नहीं है। कोई फर्क ही नहीं पड़ता है उसमें, वस्तु व्यवस्था ही ऐसी है।

पुष्पाबेन: ऐसी ही व्यवस्था है।

पूज्य बाबूजी: ऐसी ही है। बहुत ही अच्छा है। हम लोगों तक को प्रेरणा मिलती है आपसे। हमको प्रेरणा मिलती है।

पुष्पाबेन: हम तो आपकी राह देखते थे, जब से फोन आया था तो....

पूज्य बाबूजी: ये परीक्षा का काल है। तो परीक्षा के काल में सफल होना.... इतने समय तक अभ्यास किया तो वो तो सफलता तो होनी ही चाहिए। और हमें तो देवलाली से ही आपसे इतना प्रेम है, आपकी परिणति से और आपकी भद्रता से। लेकिन आपकी इतनी मजबूती है ये तो अभी मालूम पड़ी है। हाँ!

ये तो जैसे नदी के प्रवाह में फँस जाये न! नदी की बाढ़ आवे और उसमें कोई अच्छा मजबूत आदमी फँस जाये। तो जितना प्रवाह तेज होता है उतना ही वो मजबूती करता है कि तुम कितना करोगे (और) क्या करोगे। मुझे तो बहा नहीं सकते। ऐसी की ऐसी स्थिति (आपकी है)। उपयोग में इतनी ताकत आ जाती है जब चैतन्य पर स्थापित होता है, तो उसकी ताकत ही बढ़ जाती है। बढ़ क्या जाती है वो तो अनंत शक्तिवाला हो जाता है। उसमें तो ये है कि मेरे कोई क्या करेगा? आज तक हुआ भी नहीं कुछ। कल्पना मात्र सारा था और कल्पना उड़ गई। ज्यों ही वो जागा, उपयोग जागा (तो)

कल्पना उड़ गई, खतम हो गई। कल्पना मात्र था सारा। दुख ही कल्पना है क्योंकि उस तत्त्व में दुख का प्रवेश होता ही नहीं। है ही नहीं।

पुष्पाबेन: है ही नहीं तो कहाँ से होगया?

पूज्य बाबूजी: है ही नहीं। कल्पना से ही उसका जन्म होता है दुख का।

पुष्पाबेन: कल्पना से। और कोरी कल्पना!

पूज्य बाबूजी: कोरी कल्पना, कोरी। पुष्पाबेन: कोरी कल्पना।

पूज्य बाबूजी: हाँ! कुछ नहीं। पुष्पाबेन: कुछ नहीं (है) उसमें।

पूज्य बाबूजी: स्वप्न है एकदम।

पुष्पाबेन: एकदम! पूरा स्वप्न है और स्वप्न में तो फँस जाते हैं।

पूज्य बाबूजी: ऐसा ही है। बहुत-बहुत हज़ारों लोगों को आपसे प्रेरणा मिल रही है। आप तो अपने में स्थापित रहो बिल्कुल। और एक ही चिंतन माने.... चिंतन में भी ज़्यादा तरलता नहीं करना। विविध अलेख विचार (आदि) उनसे खराब होता है। वो चिंतन-धारा खराब हो जाती है। बस! एक ही चिंतन (और) कुछ नहीं है। कुछ नहीं हुआ। होना भी नहीं है कुछ। साक्षात् मुक्ति है ये ही समझना चाहिए (कि) मुक्ति उतर आई।

पुष्पाबेन: उतर आई। मेरे को तो मुक्ति की भी चाह नहीं है।

पूज्य बाबूजी: नहीं! काहे की मुक्ति की चाह? मुक्त तो पड़ा है। मुक्त तो पड़ा है। मुक्ति की कहाँ चाह है? उसकी ओर देखने पर सारी चाह, सारी अभिलाषाएँ मिट जाती हैं क्योंकि वो तो सम्पूर्ण है। सब कुछ लेकर बैठा है। उसको चाहिए नहीं न कुछ।

पुष्पाबेन: कुछ (नहीं)। पूरा भरा है।

पूज्य बाबूजी: पूरा भरा है। बहुत ही अच्छा! चिंतन भी बहुत ही सुंदर है आपका। बहुत अच्छा है।

पुष्पाबेन: पूरा भरा है तो फिर बाहर क्यों जाता है?

पूज्य बाबूजी: पूरे जीवन की सफलता की घड़ियाँ हैं ये।

पुष्पाबेन: बस! पूरे जीवन की सफलता।

पूज्य बाबूजी: हाँ! और सफल हो ही गया बस ये समझ लो आप। ये तो अपनी परिणति खुद साक्षी देती है।

पुष्पाबेन: कब देखूँ? कब देखूँ?

पूज्य बाबूजी: मैं भी बहुत.... मैं आपसे भी दुर्बल हूँ।

पुष्पाबेन: अरे! क्या बात करते हैं बाबूजी!

पूज्य बाबूजी: आपसे भी कमजोर हूँ।

पुष्पाबेन: आपने सरलता का (परिचय)....

पूज्य बाबूजी: आपने तो पूरे परिवार को ही धन्य कर दिया। चंदुभाई को भी प्रेरणा मिली है।

उनका जीवन भी आपको पाकर धन्य हो गया एक तरह से। ऐसा हर किसी को योग मिलता ही नहीं है। ये तो लाखों में किसी को मिलता है। मिलता ही नहीं है ऐसा योग।

पुष्पाबेन: नहीं, अपने तो सब साथ में ही हैं हो! कोई आगे-पीछे नहीं है। हाँ! सब साथ में ही हैं।

चंदुभाई: मतलब सबको साथ में जाना है।

पुष्पाबेन: सबको साथ में ही जाना है। आप आगे-पीछे नहीं, ऐसा सोचना भी नहीं हो!

पूज्य बाबूजी: हाँ!

पुष्पाबेन: आप भी....जैसी मैं हूँ वैसी ही आप हैं। क्या कमी है? मेरे और आपमें कमी हो तो दिखा दो, चलो।

पूज्य बाबूजी: किसी में भी (कमी) नहीं है न! सुना ही नहीं आपने (बल्कि) करके दिखा दिया सचमुच। गुरुदेव को ऐसे ही लोगों की जरूरत थी।

पुष्पाबेन: बस! ऐसे ही लोगों की जरूरत थी गुरुदेव को।

पूज्य बाबूजी: आपका तो यहाँ चल रहा है ये सारा कार्यक्रम। वहाँ तो पंडाल में तो क्या है? सुनना और भाग जाना, बस। कुछ मिला (और) कुछ नहीं मिला। यहाँ तो सब कुछ ही उतर आया है, सारा ही। ये सोचना ही नहीं कि वहाँ कुछ अच्छा हो रहा होगा।

पुष्पाबेन: नहीं! मैं नहीं सोचती हूँ। मैं तो ऐसा बोलती हूँ....

पूज्य बाबूजी: सारे जगत से अच्छा यहाँ हो रहा है। बस इतना!

पुष्पाबेन: मैं तो बोलती हूँ कि वो माहौल से ये माहौल अच्छा है।

पूज्य बाबूजी: हाँ! ये बढ़िया है। क्योंकि उसका फल ही एकांत है।

पुष्पाबेन: हाँ! एकांत है। अच्छा है। ऐसा भी होना चाहिए मतलब मेरे लिए उससे (पंडाल से) ये (एकांत) अच्छा है।

चंदुभाई: भाईश्री को बोला कि आपको गुरुदेव ने मेरे लिए भेजा है।

पूज्य बाबूजी: हाँ! ठीक बात है। और वो तो सबके साथ होनेवाला है, इसमें क्या है। किसी को क्या है, किसी को क्या! कोई इस पर अभिमान कर ही नहीं सकता। अभिमान गल जाता है।

पुष्पाबेन: दो चारण (ऋद्धिधारी) मुनि आए थे, ऊपर से उतर के (महावीर भगवान के जीव के लिए, शेर की पर्याय में)। वैसा ही मेरे लिए हुआ (कि पूज्य भाई श्री लालचंदभाई और पूज्य बाबूजी आए)।

चंदुभाई: वाह!

पूज्य बाबूजी: ठीक बात है! बिल्कुल सही।

पुष्पाबेन: आए ना ऊपर से चारण (ऋद्धिधारी) मुनि। वो भी आए थे.....

पूज्य बाबूजी: हमने तो कहा चंदुभाई को कि उनको अगर भीड़ पसंद नहीं हो तो फिर बिल्कुल हस्तक्षेप नहीं करना उनकी चिंतन-धारा में।

पुष्पाबेन: बस! तो ये बात थोड़ा बोल देना (ताकि) और बैठ जाये।

पूज्य बाबूजी: बोल दिया मैंने, बोल दिया।

पुष्पाबेन: मेरे को अच्छा नहीं लगता।

पूज्य बाबूजी: ठीक बात है! (परिणति में) फर्क पड़ता है न, वापस राग जागता है। फर्क पड़ता है उससे। अपनी परिणति में इतना एकांत पसंद आ जाए (तो) बस भव्यता की निशानी है एकदम। .....

पूज्य बाबूजी: नहीं! नहीं! इनकी तबियत के सामने हमारी तबियत क्या है? उज्ज्वल होनहार है आपका बस, ये पक्का (है)। हाँ! लेकिन उस होनहार को नहीं देखना (है) अपने को। वो तो इसके आश्रित है, उसमें क्या है। सब होनहार ही है। और कुछ भी होनहार नहीं है। ये ही है जो है वर्तमान में कि हमें क्या है! बस! बढ़ती रहे आपकी परिणति, हमारी तो बस ये ही भावना और ये ही कामना है।

पुष्पाबेन: मेरा पुरुषार्थ बढ़ता रहे। जरा भी....

पूज्य बाबूजी: ये अंतरंग भावना है। एकदम निर्विकल्प समाधि लेकर ही आप जाओ, हमारी तो ऐसी भावना है।

पंकजभाई ज़वेरी:

## गुरुदेव प्रत्ये क्षमापना-स्तुति

**गुरुदेव! तारां चरणमां फरी फरी करूं हुँ वंदना,**
**स्थापी अनंतानंत तुज उपकार मारा हृदयमां॥ १.**
**करीने कृपादृष्टि, प्रभु! नित राखजो तुम चरणमां,**
**रे! धन्य छे ए जीवन जे वीते शीतल तुज छांयमां॥ २.**
**गुरुदेव! अविनय कंई थयो, अपराध कंई पण जे थया,**
**करजो क्षमा अम बालने, ए दीनभावे याचना॥ ३.**
**मन-वचन-काय थकी थया, जाण्ये-अजाण्ये दोष जे,**
**करजो क्षमा सौ दोषनी, हे नाथ! विनवु आपने॥ ४.**
**तारी चरणसेवा थकी सौ दोष सहेजे जाय छे,**
**क्रोधादि भाव दूरे थई भावो क्षमादिक थाय छे॥ ५.**
**गुरुवर! नमु हुँ आपने, अम जीवनना आधारने,**
**वैराग्यपूरित ज्ञान-अमृत सींचनारा मेघने॥ ६.**
**मिथ्यात्वभावे मूढ थई निजतत्त्व नहीं जाण्युं अरे!**
**आपी क्षमा ए दोषनी आ परिभ्रमण टालो हवे॥ ७.**
**सम्यक्त्व-आदिक धर्म पामुं, तुज चरण-आश्रय वडे;**
**जय जय थजो प्रभु! आपनो, सौ भक्त शासनना चहे॥ ८.**
**गुरुदेव! अविनय कंई थयो, अपराध कंई पण जे थया,**
**करजो क्षमा अम बालने, ए नाथ विनवुं आपने॥**